भाषा, राष्ट्र और भारती का जीवन और साहित्य

डॉ. भीम सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, मानविकी संकाय,
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद-500046.
bhimsingh46@gmail.com
मोबाइल : 8985188739.

आलेख का सार :

वैश्विक दुनिया को भाषा के जरिये समझने की कोशिश एक सांस्कृतिक-पहल है | इस पहल को नवजागरण की चेतना और आधुनिक राष्ट्रों के परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है | भारत की बहुभाषिकता और महाकवि की राष्ट्र और भाषा के सम्बन्ध में दृष्टि को इसके अंतर्गत समझने की सार्थक कोशिश की गयी है | अधिकांश सवाल अनुत्तरित हैं ? महाकवि का जीवन और उनके साहित्य का वर्गीकरण इस दिशा में हमारी मदद करता है | महाकवि भाषा और राष्ट्र को लेकर एक ‘सेतु’ निर्मित करते हैं | वे भारतभूमि की वंदना और स्तुति के लिए तमिल, अंग्रेजी, संस्कृत और अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं का सहारा लेते हैं | ‘अनुवाद की संस्कृति’ को प्रश्रय देते हैं | आज का दौर संकीर्ण सोच और प्रांतवाद का शिकार हो रहा है | महाकवि का जीवन और साहित्य, मानवतावादी जीवन-दर्शन से अनुप्रेरित है | अत: उसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, राष्ट्रीय सन्दर्भों की अनुगूँज है | यह सब भाषा के भीतर है और भाषा, साहित्य के आधार पर आधुनिक विश्व को दिशा-निर्देशित कर सकती है |

भाषा और राष्ट्र का सवाल ?

‘सुब्रह्मण्य भारती के जीवन और साहित्य’ पर बात करने से पूर्व हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि किसी भी देश और प्रदेश के जीवन में भाषा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका को अभी तक कैसे देखा गया है ? या इसको देखने के कौन-कौन से आधार रहे हैं ? एक पराधीन मुल्क के लिए भाषा और साहित्य क्या मायने रखते हैं ? भारतीय उपमहाद्वीप में बहुभाषिकता का सन्दर्भ इतना क्यों जरूरी है ? यह बहु-भाषिकता अब क्यों द्वि-भाषिकता या एक-भाषिकता में आकार ले रही है ? सुब्रह्मण्य भारती के लिए अपनी मातृ-भाषा तमिल क्यों सर्वोपरि है ? इन ही सवालों को लेकर पहले संवाद की आवश्यकता बनती है |

यूरोपीय-चिंतकों ने आधुनिक राष्ट्र के लिए ‘भाषा’ को अनिवार्य अंग माना है | भाषा जीवन, जगत और विश्व को देखने की एक सार्वभौमिक या विश्वजनीन-दृष्टि की सहायिका भी है और उसकी निर्माता भी | भाषा की भूमिका, भावों, विचारों, संवेदों और अनुभव-संसार को रूपाकार देने की भी है | इस प्रक्रिया में, भाषा वाचिकता से लिपिबद्धता की ओर बढ़ती है | जीवन और जगत इस भाषा के सहारे अभिव्यक्त होते हैं | इस प्रक्रिया में आदिम से लोक की आधारभूमि का विस्तार होता है और यह शास्त्रीयता को निर्मित करती है | इस प्रक्रिया में विविध कलारूपों से भाषा अपनी ऊष्मा को संचालित करती है | प्रकृति के आँगन में, आदिम मानव, नृत्य, गान, वाद्य से अपने को जोड़ता आया है और इसी प्रक्रिया में उसने ‘आत्माभिव्यक्ति’ को रूपाकार देने में विविध साहित्यिक-कलारूपों को भी जन्म दिया है | ये कला-रूप, मानव की विकास-यात्रा के विविध चरणों से (आदिम, सामुदायिक और सभ्यता के विविध स्तरों से) सम्बद्ध हैं | अत: भाषा मनुष्य की भौतिक-अवस्था के साथ उसकी सम्पूर्ण चेतना की आधारशिला/आधारभूमि/भावभूमि भी है | यह केवल माध्यम-मात्र नहीं है, जैसा कि कुछ संकीर्ण सोच के व्यक्तियों का मानना है | यह ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी के महायान की संचालिका-शक्ति है | वैश्विक-परिदृश्य पर गौर करें तो इसने टूटे (विखंडित) हुए मुल्कों को मिलाया, जैसे- पूर्वी-जर्मनी और पश्चिमी-जर्मनी के एकीकरण (जर्मनी राष्ट्र) को देखा जा सकता है | उस समय तक ‘विचारधारा’ को दुनिया की सबसे ताकतवर शक्ति माना जाता था, लेकिन उसके बनिस्पत भाषा की शक्ति ने अपनी भूमिका को प्रमुख बना लिया | इससे वैश्विक-स्तर, पर भाषा की सांस्कृतिक-अहमियत का पता चला | दूसरी ओर, सोवियत-संघ के विघटन को भी देखा जा सकता है | जिसकी ‘फाँस’ अभी तक बरकरार है | तीसरी तरफ, पाकिस्तान के पूर्वी-भाग (पूर्वी-पकिस्तान) जिसे आज दुनिया ‘बांग्लादेश’ (1971) के नाम से स्वतंत्र मुल्क के तौर पर जानती है उसके अभ्युदय की कहानी के 50 वर्ष पूरे हो गए हैं | बांग्लादेश के बनने में बांग्ला-भाषा, साहित्य और संस्कृति की भूमिका प्राथमिक रही है जिसने ‘उर्दू’ भाषा के वर्चस्व को अस्वीकार

किया | जैसे-*"पूर्वी पाकिस्तान को पश्चिमी पाकिस्तानी 'मैजुती बंगाल' कहते थे और हम कहते थे, 'शोनार बांग्ला' | कविगुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी तो कहा है, 'आमार शोनार बांग्ला आमि तोमाय भालोबाशी' |"*[i]

यह 'फाँस' वैश्विक स्तर पर दो मुल्कों के संबंधों की 'टीस' के रूप में भी देखी जा रही है | जैसे- बांग्लादेश और पाकिस्तान और उत्तर-कोरिया और दक्षिण-कोरिया के संबंधों के रूप में | यहाँ एक सवाल उपस्थित होता है कि धर्म, नस्ल और विचारधारा से भी ताकतवर क्या भाषा है ? या यह मूलभूत आर्थिक-समस्या से दूर ले जाने का जरिया है ?

भारत के राज्यों का पुनर्गठन भी भाषायी आधार को लेकर हुआ है फिर गोंडी, भीली, मुंडारी, नागा आदि भाषिक-अस्मिताओं को कैसे छोड़ दिया गया ? क्या भारत के विविध क्षेत्रों में, अशांति के मूल में, सामाजिक-आर्थिक सवालों के साथ भाषायी-पहचान का मुद्दा नहीं है ? इन अनुत्तरित सवालों से टकराने की आवश्यकता है | भाषा और राष्ट्र को लेकर बहस, देश के आज़ाद होने के पूर्व से लेकर अभी तक विद्यमान है | यह 'भावात्मक' है और देश की 'निजता' का सन्दर्भ भी प्रस्तुत करती है | जैसे – नवजागरण-काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की चिंता भाषा को निजता, आत्मीयता और देश की पहचान के तौर पर रेखांकित करने की रही -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।

सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार ।।"[ii]

भारत जैसे-महादेश की वास्तविकता में भाषा, साहित्य और संस्कृति को क्या सामाजिक-आर्थिक आधार के साथ देखने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई है ? अगर हुई है तो, इसकी अभिव्यक्ति भी भाषिक-आधार पर ही हुई है | भारतीय जीवन और जगत के सवाल भारत की विविध भाषाओं और उसके साहित्य में गूंथे हुए हैं | महाकवि भारती के जीवन और साहित्य के हवाले से इस बहुलतावादी महादेश के चरित्र को समझने में मदद मिल सकती है |

सुब्रह्मण्य सी. भारती का जीवन-परिचय

सुब्रह्मण्य भारती (11 दिसम्बर,1882-11सितम्बर,1921) का जन्म मद्रास राज्य के तिरुनेलवेली जिले के अंतर्गत एक छोटी सी रियासत एट्टयपुरम में हुआ था | जब ये पाँच वर्ष के थे तभी इनकी माँ लक्ष्मी अम्माल का निधन हो गया | मातृहीन बच्चे, असमय ही परिपक्व हो जाते हैं | इनके जीवन में समय और हालात, महाकाल बनकर अवतरित होते हैं | ज़िन्दगी की रगड़ और वास्तविकता से परिचय, इनकी विराट अनुभव-संपदा होते हैं | पिता की चाह थी कि बेटा इंजीनियर बने ! लेकिन यह इच्छा पूर्ण हो यह प्रकृति को स्वीकार्य नहीं था ! वह तो उस बच्चे की ज़िन्दगी में दूसरे ही रंग भर रही थी ! ये रंग भाषाओं से लगाव और साहित्य से जुड़ाव के थे | पराधीन देश की स्थिति भी मुक्ति के लिए आकुल-व्याकुल होकर छटपटा रही थी | पिता चिन्नास्वामी सुब्रह्मण्य अय्यर का साथ भी इन्हें लम्बे समय तक नहीं मिला | जब ये सोलह वर्ष के थे तभी पिता का असमय निधन हो गया | इस दुर्घटना से एक वर्ष पूर्व इनका विवाह चेल्लम्मा के साथ कर दिया गया था | दोनों की उम्र में आठ वर्ष का अंतराल था | उन्होंने जिन्दगी में अनेक उतार-चढ़ाव देखे थे | एक उक्ति है – 'प्रतिभा जन्मजात होती है' | यह उक्ति भारती के जीवन पर चरितार्थ होती है | उन्हें ग्यारह वर्ष में ही 'भारती' की उपाधि से विभूषित किया गया, इसका श्रेय एट्टयपुरम के राजा को जाता है | उन्होंने उनकी कुशाग्र बुद्धिमत्ता को सराहा | ज़िन्दगी एक अबूझ पहेली है | इस पहेली के शिकार भारती भी थे | वे भारतीय आध्यात्मिकता और पुरातन संस्कृति के अध्ययन के लिए बनारस गए थे लेकिन वहाँ राष्ट्रवाद और क्रांतिकारियों के प्रभाव के संपर्क में आ गए | उनके लेखन और साहित्य में इन दो विपरीत दिखने वाले प्रत्ययों का क्रमिक विकास हम केन्द्रीय विषय के तौर पर पाते हैं | उनका बाना भी सिक्ख-योद्धाओं के प्रतीक का बोध कराता है | वे राजनीति और देश की चिंताओं को लेकर अपने गृह-राज्य लौटते हैं | यहाँ देशी रियासत के दरबार को सेवाएँ देते हैं और फिर स्वाधीनता की चेतना का बीज प्रस्फुटित करते हैं | अब उनकी भूमिका बदल जाती है | यह भूमिका, स्वाधीनता-सेनानी की है | यह भूमिका, देश की आज़ादी के संकल्प को मूर्त-रूप देने की है | इसमें भाषा, साहित्य, पत्रकारिता और वैचारिक-

लेखन कैसे भूमिका अदा कर सकते हैं ? इसको भी लेकर वे बहुत सचेत रहे हैं | दुनिया के मुक्तिकामी-आन्दोलन और विचारों से कैसे और किन स्तरों पर सीखने की आवश्यकता है ? इसकी चिंता भी उनके जीवन और साहित्य में स्थान पाती है |

उनका झुकाव तत्कालीन उस दौर की उग्र-राजनीति के निकट दिखता है | भारत- माता की छवि के निर्माण ने भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलन को एक दिशा और एकता प्रदान की थी | इस संकल्पना ने उन्हें गहरे तौर पर प्रभावित किया था | इन सबको आधार देने में प्रिंट-संस्कृति की भूमिका प्राथमिक थी | इससे युवा-भारती का मानस तरंगित और उद्वेलित हुआ | उनके भावों, विचारों और मातृभूमि के प्रति सरोकारों और चिंताओं को प्रेस ने अभिनव आकाश दिया | इससे पूर्व प्रिंट-संस्कृति ने लोकतंत्र और सभी की सहभागिता का मार्ग प्रशस्त कर दिया था | इसके कारण पत्रकारिता में देशज-चेतना का बीज पुष्पित हुआ | मातृभूमि की संकल्पना, वन्देमातरम, सामाजिक-सुधार की भावना, सर्वधर्मसमभाव, मानवतावाद, आधुनिकता, भाषा, शिक्षा का प्रचार-प्रसार, स्त्री-सशक्तिकरण इत्यादि विषयों को लेकर देश के भीतर मंथन और आन्दोलन चल रहा था |

तमिल-शिक्षक और पत्रकार के तौर पर उनके व्यक्तित्व ने नये फ्रन्ट खोले | इस विकासक्रम में देशी और विदेशी भाषाओं के साहित्य, दर्शन, कला, विधि, शिक्षा, शोध, (सामाजिकी, मानविकी) राजनीति, अर्थनीति, विज्ञान, तकनीकी आदि से संबद्ध साहित्य के अनुवाद ने उनके लिए नई संभावनाओं को जन्म दिया | यह आधुनिकता की बयार थी जिसमें अनुवाद की भूमिका और उसका सन्दर्भ प्राथमिक होकर उभरे | महाकवि की चिंताओं में तमिल भाषा और साहित्य की समृद्ध परम्परा को आधुनिकता के साथ कैसे अनुस्यूत किया जाए ? इसकी भी रही है |

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की जन्मभूमि का क्षेत्र पश्चिम रहा है | इस ज्ञान को कैसे अपनी-अपनी देशज भाषाओं में रूपांतरित किया जाये ? इसको लेकर महाकवि ने वैश्विक-भाषाओं और देशज-भाषाओं के साथ तालमेल बैठाया | यह एक साधना थी जिसमें लोगों की परंपरागत रूचि को बदलने का गुरुत्तर दायित्त्व भी था | ज्ञान-विज्ञान कोई एक देश और भाषा की बपौती नहीं है | यह बहुआयामी और बहुभाषिक रहा है | ज्ञान के प्रति समर्पित पीढ़ी ही राष्ट्र-निर्माण को रूपाकार देती है | महाकवि ने इस दायित्त्व को भी निभाया | लेकिन उनका आंतरिक मन भारतमाता की बेड़ियों को काटने को अकुला रहा था | इस क्रम में ब्रिटिश सत्ता का कोपभाजन भी बनना पड़ा | देश से निर्वासन और पुदुच्चेरी/पाण्डिचेरी में अभावग्रस्त जीवन जीना पड़ा |

उन्हें वहाँ की भूमि पर महर्षि अरविन्द का सामीप्य मिला और चिंतन और लेखन को विस्तार | दस वर्ष के बाद देश वापसी और फिर असमय हाथी के द्वारा मौत के मुँह में समाना | इनके जीवन-प्रसंग प्रेरणा तो देते हैं लेकिन उसका त्रासद-अंत जीवन की अबूझ पहेली ही बना रहता है |

सुब्रह्मण्य भारती का साहित्य

महाकवि भारती के लेखन को लेकर जिन अध्येताओं ने शोध किया है उनमें से प्रेमा नंदकुमार और एस. विजया भारती के नाम उल्लेखनीय हैं | प्रेमा नंदकुमार ने महाकवि के साहित्य को सात भागों में बाँटकर देखा है, जो इस प्रकार है – *"1. देशभक्ति और आज़ादी से संबद्ध कविताएँ, 2. भक्ति, भजन और ज्ञानपरक कविताएँ, 3. परमेश्वर/भगवान, प्रकृति और मनुष्य से संबद्ध लेखन, 4. कान्हा-गीत/ कृष्ण-काव्य, 5. पांचाली-प्रण/शपथ, 6. कोकिल-गीत, 7. गद्य-काव्य |"*[iii]

दूसरा वर्गीकरण एस. विजया भारती ने किया है | इन्होंने महाकवि के सम्पूर्ण-लेखन को अंग्रेजी पाठकों के समक्ष विस्तार से प्रस्तुत किया है | जैसे –*"आमुख, 1. राष्ट्रीय-कवि, 2. व्यक्तित्व, 3. महान-दार्शनिक, 4. प्रकृति-कवि, 5. कान्हा-गीत (कन्नन-पट्टू), 6. कुयिल-पट्टू (कोकिल-गीत), 7. पांचाली-प्रतिज्ञा, 8. गद्य-कार्य |"*[iv]

अब हम महाकवि भारती के लेखन के हिंदी अनुवाद से रूबरू होंगे | अभी तक हिंदी में महाकवि के लेखन को लेकर एक सार्थक और महत्त्वपूर्ण कार्य 1985 में 'तमिळ भारदियार् कविदैहळ' (सुब्रह्मण्य भारती की कविताएँ) नाम से भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ से प्रकाशित हुआ है | इसके लिप्यंतरण और गद्यानुवाद का कार्य आचार्य ति. शेषाद्रि ने किया है | पद्यानुवाद आचार्य रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय, शास्त्री 'रमेश' ने किया है | यह पुस्तक कुल 1101 पृष्ठों की रचना है | इसमें जो विषय-सूची का वर्गीकरण किया गया है वह अंग्रेजी और तमिल में लिखी गई महाकवि की रचनाओं से जुड़ता है | यहाँ उस विषय-सूची पर दृष्टिपात करना जरूरी लगता है –

'राष्ट्रीय-गीत' विषय के अंतर्गत – 'भारत-देश', 'तमिलनाडु', 'स्वतंत्रता', 'राष्ट्रीय-आन्दोलन के गीत', 'राष्ट्रनेता' और 'अन्य देश' का विभाजन किया गया है | दूसरा-प्रकार 'स्तुति-गीत' का रखा गया है, इसके अंतर्गत – 'आराध्य देवी-देवताओं की वंदना' है, इसके बाद 'दार्शनिक ज्ञान-गीत' है | तीसरा-प्रकार – 'नीति' से सम्बंधित है | इसके बाद 'समाज-सम्बन्धी कविताएँ' हैं | फिर 'फुटकर गीत' हैं | तत्पश्चात् 'बड़े सज्जन लोग' और 'आत्मकथा' का प्रवर्ग बनाया गया है | इसके बाद 'वचन-कविता' का नया वर्ग है | फिर 'कान्हा-गीत' का नया वर्ग है | 'पांचाली-शपथ' (प्रथम और दूसरा भाग) अलग प्रवर्ग है | इसके पश्चात् 'कोकिल-गान' है | तदुपरांत 'नवीन-गीत' है |

महाकवि का साहित्य मुख्यत: काव्यात्मक है | कविता का आधार गीत है | गीत का सम्बन्ध गान से है | यह आदि-पुरखों का पहला सांस्कृतिक सामूहिक-स्वर है | इस 'स्वर' की समझ महाकवि को है | इसको कैसे देश का सामूहिक गान बनाया जाये ? इसका बोध महाकवि को था | वे शब्द, संगीत और गायन को एक साथ एक माला में पिरोते हैं | हम सब जानते हैं कि संगीत और गायन को मानव-स्वास्थ्य में थैरेपी के तौर पर इस्तेमाल किया जाता रहा है | यह आदिम-नृत्य है और आदिम-मन की आकांक्षा या भूख भी | इस सांगीतिक-परंपरा का संधान करते हुए उसे राष्ट्रप्रेम से जोड़ते हैं और तत्कालीन देश की परिस्थितियों से अनुरूप सांस्कृतिक-एकता का सूत्रपात करते हैं | देश के भूगोल को कविता का विषय बनाकर अतीत से संवाद स्थापित करते हैं | इस क्रम में बंकिम का पूर्ववर्ती-लेखन उनके लिए प्रेरणा का काम करता है | उसके अभिप्राय को नवीन सन्दर्भों में व्यापक विस्तार देते हैं | जैसे-

"आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।

भारत माँ की वन्दना करें हम।

ऊँच-नीच का भेद कोई हम नहीं मानते,

जाति-धर्म को भी हम नहीं जानते।

ब्राह्मण हो या कोई और, पर मनुष्य महान है

इस धरती के पुत्र को हम पहचानते।

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।

भारत माँ की वन्दना करें हम।

वे छोटी जाति वाले क्यों हैं ? क्यों तुम उन्हें कहते अछूत ?

इसी देश के वासी हैं वे, यही वतन, यहीं उनका वज़ूद

चीनियों की तरह वे, क्या लगते हैं तुम्हें विदेशी ?

क्या हैं वे पराए हमसे, नहीं, हमारे भाई स्वदेशी ?

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।

भारत माँ की वन्दना करें हम।

भारत में है जात-पाँत और हज़ारों जातियाँ

पर विदेशी हमलावरों के विरुद्ध, हम करते हैं क्रान्तियाँ

हम सब भाई-भाई हैं, हो कितनी भी खींचतान

रक्त हमारा एक है, हम एक माँ की हैं सन्तान

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।

भारत माँ की वन्दना करें हम ।

हम से है ताक़त हमारी, विभिन्नता में एकता

शत्रु भय खाता है हमसे, एकजुटता हमारी देखता

सच यही है, जान लो, यही है वह अनमोल ज्ञान

दुनिया में बनाएगा जो, हमें महान में भी महान

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।

भारत माँ की वन्दना करें हम ।

हम रहेंगे साथ-साथ, तीस कोटि साथ-साथ

डाल हाथों में हाथ, तीस कोटि हाथ साथ

हम गिरेंगे साथ-साथ, हम मरेंगे साथ-साथ

हम उठेंगे साथ-साथ, जीवित रहेंगे साथ-साथ

आओ गाएँ 'वन्देमातरम'।

भारत माँ की वन्दना करें हम ।’[v]

मूल तमिल से अनुवाद (कृष्णा की सहायता से) : अनिल जनविजय

उपरोक्त पूरी कविता का सन्दर्भ देना इसलिए जरूरी लगा क्योंकि बंकिम का ‘वन्देमातरम’ यहाँ एक नाम के तौर पर आया है | महाकवि ने मानव-एकता (मानवतावादी जीवन-दर्शन) को प्राथमिकता दी है | भारतीय समाज-व्यवस्था की वर्ण आधारित जाति-संरचना की मुखर आलोचना है | श्रेष्ठता के दम्भ की कटु आलोचना है | यह आलोचना ‘श्वेत-नस्ल’ के सिद्धांत की भी है और देश

के भीतर अविद्या और अंधविश्वास के कारण पनपी मान्यताओं की भी | कवि भेदभाव को मानव जाति पर कलंक के रूप में देखता है | देश की लड़ाई और मुक्ति में सभी का सहयोग अपेक्षित है | सामासिक-संस्कृति के सन्दर्भ भी इस कविता को नवीन आयाम देते हैं | नस्लवाद के सिद्धांत की भी आलोचना है | देश की एकजुटता का संकल्प कविता की मूल थीम है | सम्पूर्ण देशवासियों को एक साथ जोड़ा गया है | इस रूप में भक्तिकाल की भक्ति को देश-भक्ति के साथ रूपांतरित किया गया है | आधुनिक-भावबोध समाज, देश, विज्ञान, तर्क और इह-लौकिकता को महत्त्व देता है | ये सारे प्रसंग इस कविता को आधुनिक बनाते हैं |

कवि की देशभक्तिपरक कविताएँ आज़ादी के स्वर को मुखर बनाती हैं | जैसे – 'भारत माता', 'जय भारत', 'भारत मातृभूमि', 'गुरू गोविन्द', 'लोकमान्य तिलक', 'आज़ादी की भूख', 'तमिल-स्तुति' आदि कविताओं को देखा जा सकता है |

हिंदी के सुप्रसिद्ध आलोचक रामविलास शर्मा ने महाकवि के साहित्य को लेकर विस्तार से लिखा है | उन्होंने 'भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश' (2012) पुस्तक के दूसरे भाग का दसवाँ अध्याय महाकवि ('सुब्रह्मण्य भारती के साहित्य में जातीय चेतना') के साहित्य को आधार बनाकर लिखा है | इस अध्याय के ग्यारह उप-अध्याय हैं जो इस प्रकार हैं- *"पराधीन भारत में नवजागरण, अंग्रेजी राज को चुनौती, सांस्कृतिक विरासत की अस्त्रसज्जा से साम्राज्यवाद का विरोध, भारतीय संस्कृति-रूढ़ियों के विरोध में, भारती के चिंतन में योग की भूमिका, भारती का जीवन-संघर्ष, भारती के चिंतन में स्वाधीन भारत का स्वरूप, भारती के चिंतन में जातीय-चेतना– भाषा, भारती के चिंतन में जातीय-चेतना – तमिल सिद्ध परंपरा, भारती के साहित्य में जातीय चेतना- तमिल भक्ति परंपरा, तमिल नवजागरण को भारती की देन |"*[vi]

उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पह हम समझ सकते हैं कि महाकवि के साहित्य की 'रेन्ज' व्यापक थी | उसमें स्त्रियों और बच्चों के सवाल (पत्रकारिता और सृजनात्मक साहित्य) प्राथमिक होकर उभरे हैं | इसका श्रेय बंगाल के नवजागरण और वहाँ के बुद्धिजीवियों को जाता है | दूसरा श्रेय, भगिनी निवेदिता को जाता है | दोनों से महाकवि ने सीखा | भारत माता की छवि (काली का रचनात्मक प्रयोग) को सबल करने के क्रम में स्त्री की भूमिका का सहारा लिया गया | भाषा के आधार पर जातीयता का विकास हुआ | जैसे- बंगाली, तमिल, मराठी, पंजाबी, गुजराती, तेलुगु (आंध्र), कन्नड़, मलयालम आदि | इस जातीयता के ऊपर राष्ट्र को रखा गया | इस रूप में भारतीयता का उद्घाटन हुआ | स्वराज्य का एक आयाम सांस्कृतिक भी था | उसके और भी स्वर थे, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि | इनकी कविता में विकसनशील और प्रगतिशील तत्त्व भी हैं | जैसे – "यदि राष्ट्र का एक व्यक्ति भी भोजनरहित रहता है तो हम जगती का विध्वंस कर देंगें |" [vii]

---

[i] माजी, महुआ, "मैं बोरिशाइल्ला : बांग्लादेश के अभ्युदय की महागाथा", राजकमल पेपरबैक्स, पहला संस्करण, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2007, पृ.सं. 80

[ii] https://hi.wikipedia.org/wiki/ निज भाषा उन्नति अहै/ 14 सितम्बर, 2021

[iii] Nandakumar, Prema, "Poems of Subramania Bharati", { A Selection in an English Verse Rendering, with an Introduction and Notes}, published by Sahitya Akademi, New Delhi, 1977,pp.iii-v

[iv] Bharati, Vijaya, S., "Subramania Bharati : Personality and Prose", published by Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd, New Delhi, 1975, pp. v- vi

[v] http://kavitakosh.org/kk/ वन्देमातरम/ सुब्रह्मण्यम भारती/18 मार्च, 2021

[vi] शर्मा, रामविलास, "भारतीय संस्कृति और हिंदी-प्रदेश : 2 भाग", किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण : 2012 पृष्ठ सं. 12

[vii] डॉ.नगेन्द्र (संपादक), "भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास", तृतीय संस्करण, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2013, पृ.सं. 454